

Shareer Jinnat Ko Badi Ki Taaqat Kahna Kalsa ? (Hindi)



फैजाने म-दनी मुजा-करा (कित्त : 23)

शरीर जिन्नात को बदी की ताक़त कहना कैसा ? (मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़ीक़त, अमीरे अहसे सुन्नत, यानिये दा'वते इस्लामी हुज़रते अल्लामा मौलाना अबू ख़िलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि र-ज़वी ज़ियाई رحمۃ اللہ علیہ के म-दनी मुजा-करे नम्बर 11 और 12 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शे'थे "फैजाने म-दनी मुजा-करा" मे नई तरतीब और कमीर मवाद के साथ तप्यार किया है ।

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَاعَبُدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि र-जवी **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ**

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।

(المستطرف ج ١ ص ٤٠١ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया) । **(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)**

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक-त-बतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये ।



मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “शरीर जिन्नात को बदी की ताक़त कहना कैसा ?”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए म-दनी मुज़ा-करा) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतियाम किया गया है। मा'लूमात के लिये “हुरूफ़ की पहचान” नामी चार्ट मुला-हज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन हर्फ़ के नीचे खोड़ा (˘) लगाने का एहतियाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन وَشَوْت، اسْتِغْمَال (दा'वत, इस्ति'माल) वगैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।



हुरूफ़ की पहचान

फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = س	ठ = ٹ	ट = ٹ	थ = ث	त = ت
ह = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ز
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख़ = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ای	इ = اِ	ऐ = اَی	ए = اَی	य = ی

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेट हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9327776311 'E-mail :translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

التَّحْتِ لِلَّهِ عَلَيْهِ التَّحْتِ لِلَّهِ عَلَيْهِ तब्बलीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी जि़याई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने अपने मख़सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो हिक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अर्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की सोहबत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़तन फ़ वक़तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ किस्म के मौजूआत म-सलन अक़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअत व तरीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व तिब, अख़्लाकिय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ-मलात और दीगर बहुत से मौजूआत से मु-तअल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ उन्हें हिक्मत आमोज़ और इश्के रसूल में डूबे हुए जवाबत से नवाज़ते हैं ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के इन अता कर्दा दिलचस्प और इल्मो हिक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की खुशबूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तहत अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा "फैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ "फैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" के नाम से पेश करने की सआदत हासिल कर रहा है । इन तहरीरी गुलदस्तों का मुता-लआ करने से إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ अक़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बातिन की इस्लाह, महब्वते इलाही व इश्के रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा ।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यकीनन रब्बे रहीम عَزَّوَجَلَّ और उस के महबूबे करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अताओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की शफ़क़्तों और पुर खुलूस दुआओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गैर इरादी कोताही का दख़ल है ।

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए फैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

26 जुल का'दिल हराम 1438 सि.हि./19 अगस्त 2017 ई.

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

शरीर जिन्नात को बदी की ताकत कहना कैसा ? (मअ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मा 'लूमात का अनमोल खज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरदारे दो जहान, महबूबे रहमान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रहमत निशान है : मुसलमान जब तक मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहता है फिरिश्ते उस पर रहमतें भेजते रहते हैं, अब बन्दे की मरजी है कम पढ़े या ज़ियादा ।⁽¹⁾

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

शैतान या शरीर जिन्नात को बदी की ताकत कहना कैसा ?

सुवाल : शैतान या शरीर जिन्नात को बदी की ताकत कहना कैसा है ?

जवाब : शैतान या शरीर जिन्नात को बदी की ताकत कहना दर हकीकत इन के जिस्मानी वुजूद का इन्कार करना है और येह कुफ़्र है जैसा कि सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं :

دينه

① ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب الصلوة على النبي، 1/390، حديث: 904 دار

المعرفة بيروت

(जिन्नात) के वुजूद का इन्कार या बदी की कुव्वत का नाम जिन्न या शैतान रखना कुफ़्र है।⁽¹⁾ आज कल बा'ज नादान लोग यह कहते सुनाई देते हैं कि हम जिन्नात को नहीं मानते, जिन्नात का वुजूद ही नहीं है, यह सब अक्ली ढकोसले (खुराफ़ात) हैं ऐसा कहना कुफ़्र है क्यूं कि कुरआने पाक से जिन्नात के वुजूद का सुबूत मिलता है बल्कि कुरआने पाक में “सू-रतुल जिन्न” के नाम से पूरी एक सूरात है। जिन्नात के वुजूद का इन्कार करना गोया कुरआने पाक की आयाते मुबा-रका का इन्कार करना है। पारह 27 सू-रतुज़्ज़ारियात की आयत नम्बर 56 में खुदाए रहमान **عَزَّوَجَلَّ** का फ़रमाने अलीशान है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही (या'नी इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

और पारह 14 सू-रतुल हिज़्र की आयत नम्बर 27 में इर्शाद होता है :

وَالجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السُّمُورِ ﴿٥٧﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्न को इस से पहले बनाया बे धूएं की आग से।

जिन्नों में मज़ाहिब

सुवाल : क्या जिन्नों में भी मज़ाहिब होते हैं ?

जवाब : जी हां ! जिस तरह इन्सानों में मुख़ालिफ़ मज़ाहिब के लोग होते हैं इसी तरह जिन्नात में भी दीने इस्लाम के मानने और न मानने

دينه

①..... बहारे शरीअत, 1/97, हिस्सा : 1, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

वाले दोनों किस्म के गुरौह मौजूद हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّبِّ** फ़रमाते हैं : जिन्नात में मोमिन भी होते हैं और काफ़िर भी ।⁽¹⁾ इसी तरह जिन्नात में सुन्नी भी होते हैं और बद् मज़हब भी नीज़ अइम्मए अरबआ (इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ेई, इमाम मालिक, और इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ**) के पैरव-कार भी होते हैं । इसी तरह सलासिले अरबआ (या'नी कादिरि, चिशती, नक्शबन्दी और सुहरवर्दी सिल्लिसले) से भी तअल्लुक़ रखते हैं ।⁽²⁾

शबीह वाले मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ना कैसा ?

सुवाल : जिस मुसल्ले पर ख़ानए का'बा या गुम्बदे ख़ज़रा की शबीह (या'नी तस्वीर) बनी हो उस पर नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है या नहीं ?

जवाब : ख़ानए का'बा या गुम्बदे ख़ज़रा की शबीह (या'नी तस्वीर) वाले मुसल्लों पर नमाज़ पढ़ना अगर तौहीन की निय्यत से न हो तो जाइज़ है अलबत्ता इन पर नमाज़ पढ़ने से बचना बेहतर है । लोग ख़ानए का'बा या गुम्बदे ख़ज़रा की तसावीर की फ़्रेम बनवा कर घरों में आवेज़ां करते, उन की ता'ज़ीमो तौक़ीर बजा लाते हैं

دينه

① كتاب العظمة، ذكر الجن وخلقهم، ص ٢٩، حديث: ١٣٤٠، ادار الكتب العلمية بيروت

② जिन्नात से मु-तअल्लिक़ तफ़सीली मा'लूमात जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 262 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत” हदिय्यतन हासिल कर के इस का मुता-लआ कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बे शुमार मा'लूमात का ख़ज़ाना हाथ आएगा ।
(शो'बए फैजाने म-दनी मुजा-करा)

और अगर कहीं नीचे ज़मीन पर रखी हुई इन की शबीह (तस्वीर) नज़र आ जाए तो बड़े अदब के साथ चूम कर बुलन्द जगह पर रख देते हैं लेकिन नमाज़ के वक़्त इन का ख़ानए का'बा या गुम्बदे ख़ज़रा की शबीह वाले मुसल्ले बिछ कर इन्हें अपने क़दमों तले रखना, इन पर घुटने टेकना, इन पर बैठना और नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही मुसल्ला लपेट कर एक तरफ़ फेंक देना येह क़ाबिले गौर है कि एक तरफ़ तो इन का इतना अ-दबो एहतिराम किया जाता है और दूसरी तरफ़ इन्हें बिछ कर पाउं के नीचे रखा जाता है !

(शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** फ़रमाते हैं :) तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अ़ालमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के मा'रिजे वुजूद में आने से पहले भी मैं ख़ानए का'बा या गुम्बदे ख़ज़रा की शबीह वाले मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ने से इज़्तिनाब करता था । येह मेरी अपनी सोच है कि जब हम इन मुक़द्दस मक़ामात की इतनी ता'ज़ीम करते हैं तो फिर इन की शबीह वाले मुसल्लों पर पाउं रख कर कैसे खड़े हों ? मेरे इस अ़मल पर किसी सुन्नी अ़ालिम ने मेरी मुखा-लफ़त भी नहीं की बल्कि एक अ़ालिम साहिब के पास मेरा आना जाना था, उन के हां भी शबीह वाले मुसल्ले बिछे होते थे, मैं ने बड़े अदब के साथ उन की तवज्जोह इस तरफ़ मबज़ूल करवाई तो उन्होंने ने न सिर्फ़ मेरी हिमायत की बल्कि वोह मुसल्ले भी उठवा दिये ।

इसी तरह लोग मदीनए मुनव्वरह **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** के मुसल्ले ला कर घरों में इस्ति'माल करते हैं। खाके मदीना का तो इस कदर अदब करते हैं कि उसे पाउं के नीचे नहीं आने देते, अगर उन्हें खाके मदीना मिल जाए तो उसे चूमते और आंखों में बतौरै सुरमा लगाते हैं लेकिन नमाज के वक़्त मदीने के मुसल्ले पर पाउं रख कर खड़े हो जाते हैं, अगरचें येह जाइज है मगर मेरा दिल गवारा नहीं करता कि कहां मदीने शरीफ का बा ब-र-कत मुसल्ला और कहां हमारे गुनहगार पाउं दोनों में कोई तकाबुल ही नहीं।

چہ نِسْبَتِ خَاکِ رَا بَا عَالَمِ پَاکِ

या'नी मिट्टी को आलमे पाक से क्या निस्बत है

बहर हाल शरअन शबीह वाले और मदीनए मुनव्वरह **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** से लाए गए मुसल्लों पर नमाज पढ़ना जाइज है लेकिन अदब का तकाजा येही है कि इन मुसल्लों का भी एहतिराम किया जाए। हज व उम्रह से वापस आने वाले बहुत से लोग मुझे बतौरै तोहफ़ा खानए का'बा और गुम्बदे खज़रा की शबीह वाले मुसल्ले दे जाते हैं मगर मैं नंगे फ़र्श पर ही नमाज पढ़ना पसन्द करता हूँ।

बिला हाइल ज़मीन पर नमाज पढ़ना अफ़ज़ल है

सुवाल : नंगे फ़र्श पर नमाज पढ़ना कैसा है ?

जवाब : (शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ** फ़रमाते हैं :)

मैं नंगे फ़र्श पर ही नमाज पढ़ना पसन्द करता हूँ। इस की पहली

वज्ह येह है कि बिगैर कुछ बिछाए नंगे फ़र्श पर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है जैसा कि मराक़िल फ़लाह में है : ज़मीन पर बिला हाइल (या'नी मुसल्ला, दरी या कपड़ा वगैरा बिछाए बिगैर) नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है ।⁽¹⁾ हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيزِ सिर्फ़ मिट्टी ही पर सज्दा करते थे ।⁽²⁾ और ज़मीन पर बिला हाइल नमाज़ पढ़ना तो हमारे प्यारे आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से भी साबित है चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी रिवायत कर्दा तवील हदीस के आखिर में फ़रमाते हैं : इक्कीस र-मज़ानुल मुबारक की सुब्ह को मेरी आंखों ने मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस हालत में देखा कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पेशानी मुबारक पर पानी वाली गीली मिट्टी का निशाने अलीशान था ।⁽³⁾ इस हदीसे पाक से मा'लूम हुवा कि रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़ाक पर सज्दा अदा फ़रमाया जभी तो ख़ाक के खुश नसीब ज़रत सरवरे काएनात, शहन्शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की नूरानी पेशानी से बे ताबाना चिमट गए थे ।

دينه

① نور الايضاح مع مرآة الفلاح، كتاب الصلوة، فصل فيما لا يكره للمصل، ص 190 مكتبة

المدينه باب المدينه كراچي

② مكاشفة القلوب، الباب الثامن والاربعون... الخ، ص 181 دار الكتب العلمية بيروت

③ مشكاة المصابيح، كتاب الصوم، باب ليلة القدر، الفصل الاول، 1/393، حديث: 2086 دار

الكتب العلمية بيروت

दूसरी वजह यह है कि मुसल्ले उमूमन लम्बाई और चौड़ाई में कम होते हैं बा'ज अवकात जिस्म को कुछ न कुछ समेटना पड़ता है जिस से नमाज़ में तवज्जोह बटती है। मुसल्ले की लम्बाई कम होने की वजह से उस की किनारी पर सज्दा करना पड़ता है और नमाज़ में दरी या मुसल्ले की किनारी पर जब मेरा पाउं पड़ता या सज्दे में पेशानी लगती है तो मुझे परेशानी का सामना करना पड़ता है और यह मस्अला सिर्फ मुझे ही दरपेश नहीं बल्कि औरों को भी इस से वासिता पड़ता होगा। बिल खुसूस भारी (Heavy) जसामत वाले इस्लामी भाइयों को इस की किनारियों से तकलीफ़ होती होगी।

तीसरी वजह यह है कि दरियां वगैरा आगे पीछे फिसलती रहती हैं जिस की वजह से इन पर सफ़ भी दुरुस्त नहीं बनती लिहाज़ा जब तक इन की हाजत न हो इन्हें न बिछाया जाए ताकि दौराने जमाअत सफ़े भी दुरुस्त बनें और नमाज़ में खुशूओ खुजूअ भी हासिल हो। अलबत्ता जिन अलाकों में सर्दी हो और नमाज़ियों को फ़र्श से तकलीफ़ होती हो तो वहां दरियां बिछाने में हरज नहीं बल्कि जहां बहुत ज़ियादा सर्दी हो वहां सादा पतला क़ालीन (Carpet) बिछाने में भी हरज नहीं। दा'वते इस्लामी के म-दनी मराकिज़ या मसाजिद व मदारिस में क़ालीन (Carpet) मु-तअल्लिक़ा जिम्मादारान की इजाज़त से ही बिछाया जाए और फिर इस की देखभाल और सफ़ाई वगैरा के शर-ई तकाज़े भी पूरे किये जाएं।

नक़शो निगार वाले मुसल्लों पर नमाज़ पढ़ना अच्छा नहीं

सुवाल : बा'ज़ मुसल्लों और कारपेट (Carpet) पर फूल, मेहराबें या मसाजिद वगैरा की तसावीर बनी होती हैं इन पर नमाज़ पढ़ना कैसा है ?

जवाब : नक़शो निगार वाले मुसल्लों पर नमाज़ पढ़ने में तो कोई हरज नहीं मगर इन का इस्ति'माल न ही हो तो अच्छा है क्यूं कि हालते नमाज़ में सज्दे के मक़ाम पर नज़र करना मुस्तहब है और येह तै शुदा (Understood) बात है कि जब नमाज़ी सज्दे के मक़ाम पर देखेगा तो मुसल्ले या कारपेट (Carpet) की ज़ैबाइश और चमक दमक वगैरा की वज्ह से इस की तवज्जोह बटेगी जैसा कि मुफ़्तये आ'ज़म पाकिस्तान, वक़ारुल मिल्लत हज़रते मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद वक़ारुद्दीन क़ादिरि र-ज़वी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرِ** फ़रमाते हैं : नक़शो निगार वाली जा नमाज़ों पर नमाज़ पढ़ना अच्छा नहीं है कि तवज्जोह इन की तरफ़ रहेगी और खुशूओ खुजूअ में फ़र्क़ आएगा ।⁽¹⁾

मुसल्लों से चिट जुदा कर दीजिये

सुवाल : आज कल उमूमन मुसल्लों के साथ चिट लगी होती है जिस पर इन को तय्यार करने वाली कम्पनी वगैरा का नाम लिखा होता है ऐसे मुसल्लों पर नमाज़ पढ़ना कैसा है ?

जवाब : ऐसे मुसल्ले जिन पर कुछ लिखा हुवा हो उन पर नमाज़ न पढ़ी जाए । उन मुसल्लों पर लगी हुई चिट को जुदा कर के उन्हें

دينه

1..... वक़ारुल फ़तावा, 2/514, बज़्मे वक़ारुद्दीन, बाबुल मदीना कराची

इस्ति'माल में लाया जाए। सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : बिछोने या मुसल्ले पर कुछ लिखा हुआ हो तो उस को इस्ति'माल करना ना जाइज़ है, येह इबारत उस की बनावट में हो या काढी गई हो या रोशनाई से लिखी हो अगर्चे हुरूफ़े मुफ़्फ़दा (या'नी जुदा जुदा हुरूफ़) लिखे हों क्यूं कि हुरूफ़े मुफ़्फ़दा (या'नी जुदा जुदा लिखे हुए हुरूफ़) का भी एहतिराम है। अक्सर दस्तर ख़वान पर इबारत लिखी होती है ऐसे दस्तर ख़वानों को इस्ति'माल में लाना उन पर खाना खाना न चाहिये। बा'ज लोगों के तक्यों पर अशआर लिखे होते हैं उन का भी इस्ति'माल न किया जाए।⁽¹⁾

मस्जिद की दरियों का बे महल इस्ति 'माल

सुवाल : मस्जिद की दरियां वगैरा अपने जाती इस्ति'माल में लाना कैसा है ?

जवाब : मस्जिद की किसी भी चीज़ को अपने जाती इस्ति'माल में नहीं ला सकते। बा'ज इमाम व मुअज़्ज़िन साहिबान मस्जिद की दरियां अपने हुजरे में बिछा लेते हैं येह मस्जिद की दरियों का बे महल इस्ति'माल है जो कि जाइज़ नहीं। सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : मस्जिद की अश्या म-सलन लोटा चटाई वगैरा को किसी दूसरी गरज़ में इस्ति'माल

دينه

1..... बहारे शरीअत, 3/652, हिस्सा : 16

नहीं कर सकते म-सलन लोटे में पानी भर कर अपने घर नहीं ले जा सकते अगरचें येह इरादा हो कि फिर वापस कर जाऊंगा । उस की चटाई अपने घर या किसी दूसरी जगह बिछाना ना जाइज है । यूंही मस्जिद के डोल रस्सी से अपने घर के लिये पानी भरना या किसी छोटी से छोटी चीज को बे मौक़अ और बे महल इस्ति'माल करना ना जाइज है ।⁽¹⁾

मो 'तकिफ़ीन का मस्जिद के वुजूख़ाने पर कपड़े धोना

सुवाल : क्या मो'तकिफ़ वुजूख़ाने पर कपड़े धो सकता है ?

जवाब : वुजूख़ाना अगर फ़िनाए मस्जिद में है तो उस पर मो'तकिफ़ बिना तकल्लुफ़ जा सकता है मगर जहां तक कपड़े धोने का तअल्लुक़ है तो इस के बारे में अर्ज है कि वुजूख़ाने पर कपड़े न धोए जाएं क्यूं कि मस्जिद का पानी नमाज़ियों की ज़रूरिय्यात के लिये होता है । अगर हर मो'तकिफ़ अपने कपड़े या चादरें वगैरा वुजूख़ाने पर धोना शुरूअ कर दे तो जिस मस्जिद में पानी महदूद होगा वहां नमाज़ियों को दिक्कत का सामना करना पड़ेगा और जिन नमाज़ियों के घर मस्जिद के अतराफ़ में नहीं मस्जिद में पानी न होने के सबब वोह जमाअत से महरूम रह जाएंगे ।

दा 'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम पूरे र-मज़ानुल मुबारक के तरबियती ए'तिकाफ़ और खुसूसन र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे के सुन्नत ए'तिकाफ़ की तरकीब होती है । इस

بیتہ

①..... बहारे शरीअत, 2/561, हिस्सा : 10

में **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** हजारों इस्लामी भाई ए'तिकाफ़ की सआदत हासिल करते हैं। अब अगर हर मो'तकिफ़ इस्लामी भाई अपने कपड़े मस्जिद के वुजूख़ाने पर धोना शुरू कर दे तो पानी ख़त्म हो जाएगा और बिल आख़िर खुद मो'तकिफ़ीन को और आम नमाज़ियों को शदीद तकलीफ़ का सामना करना पड़ेगा लिहाज़ा मो'तकिफ़ीन इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह ए'तिकाफ़ में बैठने से पहले अपने कपड़े धुलवा लें या फिर लोन्ड्री के ज़रीए धुलवाने की तरकीब बनाएं।

दौराने ए'तिकाफ़ कपड़े वगैरा धोने की तरकीब न ही बनाई जाए तो बेहतर है ताकि जो वक़्त कपड़े धोने में सर्फ़ हो रहा है वोह भी सीखने सिखाने और इबादत करने में सर्फ़ हो, अलबत्ता अगर किसी के पास कपड़ों के एक या दो जोड़े हों और वोह मैले या नापाक हो गए हों अब घर मस्जिद के करीब है न कोई धो कर देने वाला और न ही पास इतने पैसे हैं कि लोन्ड्री से धुलवा सके तो ऐसी मजबूरी की हालत में वोह वुजूख़ाने पर कपड़े धो ले मगर इस एहतियात के साथ कि पानी का एक छींटा भी मस्जिद की दरी या फ़र्श पर गिरने न पाए लिहाज़ा किसी बड़े बरतन या टब वगैरा में कपड़े धोए जाएं। यूं ही वुजू करते वक़्त भी इस बात का ख़याल रखा जाए कि वुजू की कोई छींट मस्जिद में न गिरे। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** की बारगाह में अर्ज़ की गई कि “अगर मो'तकिफ़ किसी मा'कूल वजह से मस्जिद ही में वुजू करे तो

उसे इजाज़त होगी ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : नहीं, मगर जब कि वोह ब एहतियात इस तरह वुजू करे कि उस के वुजू की छींट मस्जिद में न गिरे कि इस की सख़्त मुमा-न-अत है। अक्सर देखा गया है कि फ़सील (या’नी हौज़ की दीवार) पर वुजू किया और वैसे ही हाथ झटक्ते फ़र्शे मस्जिद में पहुंच गए, येह ना जाइज है। मैं ने एक बार बिगैर बरतन के ख़ास मस्जिद में वुजू जाइज तौर पर किया, वोह यूं कि पानी मूसला धार पड़ रहा था और मैं मो’तकिफ़, जाड़ों के दिन थे, मैं ने तोशक (या’नी रूईदार बिस्तर) बिछा कर और उस पर लिहाफ़ डाल कर वुजू कर लिया। इस सूरत में एक छींट भी मस्जिद के फ़र्श पर न पड़ी, पानी जितना वुजू का था तोशक व लिहाफ़ ने ज़ब्ब कर लिया।⁽¹⁾

हालते ए’तिकाफ़ में नहाने का हुक्म

सुवाल : मो’तकिफ़ गुस्ल फ़र्ज होने के इलावा भी नहा सकता है या नहीं ? नीज मो’तकिफ़ का वुजूख़ाने पर साबुन इस्ति’माल करना कैसा है ?

जवाब : इस्तिन्जा ख़ाने और गुस्ल ख़ाने उमूमन फ़िनाए मस्जिद ही में बने होते हैं लिहाज़ा मो’तकिफ़ बिना तक्ल्लुफ़ इन पर आ जा सकता है, गुस्ल भी कर सकता है और साबुन भी इस्ति’माल कर सकता है। फ़र्ज गुस्ल के इलावा ठन्डक हासिल करने के लिये या सुन्नत या मुस्तहब गुस्ल करने से भी मो’तकिफ़ के

بينه

①..... मल्फूज़ाते आ’ला हज़रत, स. 236, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

ए'तिकाफ़ पर कोई असर नहीं पड़ता मगर फ़र्ज़ गुस्ल के इलावा गुस्ल करते वक़्त येह ज़रूर देख लिया जाए कि इस के लिये मुनासिब वक़्त और पानी भी मौजूद है या नहीं। अगर वक़्त ऐसा हो कि नहाने लगेंगे तो किसी भी फ़र्ज़ नमाज़ की जमाअत या खुत्बए जुमुआ और नमाज़े जुमुआ फ़ौत हो जाने का अन्देशा है या सीखने सिखाने के हल्कों में शिर्कत नहीं हो पाएगी या पानी ख़त्म हो जाएगा जिस की वजह से अपने आप को और दूसरों को शदीद मशक्कत का सामना करना पड़ेगा तो ऐसी सूरत में सुन्नत या मुस्तहब गुस्ल करने से परहेज़ करें। वैसे भी मज़हबे ह-नफी में जुमुआ का गुस्ल सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा है जैसा कि ख़ा-तमुल मुहक्किनीन हज़रते सय्यिदुना अल्लामा इब्ने अबिदीन शामी **فَدَسَ سِرُّهُ السَّامِي** फ़रमाते हैं : नमाज़े जुमुआ के लिये गुस्ल करना सु-नने ज़वाइद (या'नी सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा) में से है, इस के तर्क पर इताब (या'नी मलामत) नहीं।⁽¹⁾ अगर गुस्लखाने फ़िनाए मस्जिद में न हों बल्कि दूर हों तो फिर मो'तकिफ़ फ़र्ज़ गुस्ल के इलावा ठन्डक हासिल करने या सुन्नत या मुस्तहब गुस्ल करने और साबुन के साथ हाथ मुंह धोने के लिये वहां नहीं जा सकता।

इल्मे दीन से दूरी और जहालत के सबब बा'ज़ लोग सुन्नत के मुताबिक़ वुजू और गुस्ल करना भी नहीं जानते जिस की वजह से बहुत ज़ियादा पानी जाएअ होता है। आज कल तो हालत येह है कि लोग जब वुजू करने के लिये बैठते हैं तो बैठते ही नल खोल लेते हैं फिर बड़े मजे से आस्तीन चढ़ा कर वुजू करना

دينه

1 مد المحتار، كتاب الطهارة، مطلب في رطوبة الفرج، 1/339 دار المعرفة بيروت

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शुरूअ करते हैं तो इस तरह वुजू शुरूअ करने से पहले ही काफ़ी पानी जाएअ हो चुका होता है। इसी तरह मिस्वाक करते वक़्त और सर का मस्ह करते वक़्त भी नल खुला रहता है तो यूं भी काफ़ी मिक्दार में पानी जाएअ हो जाता है। याद रखिये ! जहां आधे चुल्लू पानी से काम चलता हो वहां पूरा चुल्लू पानी लेना भी इसराफ़⁽¹⁾ में दाख़िल है जैसा कि सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : चुल्लू में पानी लेते वक़्त ख़याल रखें कि पानी न गिरे कि इसराफ़ होगा। ऐसा ही जिस काम के लिये चुल्लू में पानी लें उस का अन्दाज़ा रखें, ज़रूरत से ज़ियादा न लें म-सलन नाक में पानी डालने के लिये आधा चुल्लू काफ़ी है तो पूरा चुल्लू न ले कि इसराफ़ होगा। हाथ, पाउं, सीना, पुशत पर बाल हों तो हड़ताल वगैरा से साफ़ कर डाले या तरशवा ले, नहीं तो पानी ज़ियादा खर्च होगा।⁽²⁾ **اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हमें ने'मतों की क़द्र करने और इसराफ़ से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ

دینہ

- 1..... इसराफ़ के बारे में तफ़्सीलात जानने और खुद को इस से बचाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जवी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ اَعَالِيَهُ** की 499 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "नमाज़ के अहक़ाम" सफ़हा 48 ता 63 का मुता-लअा कीजिये **اِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** इसराफ़ से बचने का ज़ेहन बनेगा।

(शो'बए फैजाने म-दनी मुजा-करा)

- 2..... बहारे शरीअत, 1/302, हिस्सा : 2

मुरतद होने के बा 'द मुसल्मान होने वाले की क़ज़ा नमाज़ों का हुक्म

सुवाल : अगर खुदा न ख़्वास्ता कोई बद नसीब कलिमए कुफ़्र बक कर दाइरए इस्लाम से ख़ारिज हो जाए तो तजदीदे ईमान के बा'द क्या उसे साबिका नमाज़ रोज़े की क़ज़ा करनी होगी या नहीं ?

जवाब : मुसल्मान होने के बा'द जो **مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मुरतद या'नी काफ़िर हो गया तो उस के साबिका तमाम नेक आ'माल म-सलन नमाज़, रोज़ा, हज़, ज़कात और स-दका व ख़ैरात वग़ैरा ग़ारत (या'नी बरबाद) हो गए, साहिबे इस्तिताअत होने की सूरत में हज़ दोबारा करना होगा । अलबत्ता ज़मानए इस्लाम की जो नमाज़ें और रोज़े बाकी थे वोह अब भी ब दस्तूर बाकी हैं लिहाज़ा इन की अदाएंगी ज़रूरी है चुनान्चे सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** फ़रमाते हैं : ज़मानए इस्लाम में कुछ इबादात क़ज़ा हो गईं और अदा करने से पहले मुरतद हो गया, फिर मुसल्मान हुवा तो उन इबादात की क़ज़ा करे और जो अदा कर चुका था अगर्चे इरतिदाद से बातिल हो गई मगर उस की क़ज़ा नहीं अलबत्ता अगर साहिबे इस्तिताअत हो तो हज़ दोबारा फ़र्ज़ होगा ।⁽¹⁾ हालते इरतिदाद में **مَعَادَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** जितने दिन गुज़रे उन में नमाज़ पढ़ना न पढ़ना बराबर है, पढ़ी तो उस का कोई सवाब नहीं, न पढ़ी तो उस की क़ज़ा नहीं क्यूं कि

دينه

①..... बहारे शरीअत, 2/458, हिस्सा : 9

हालते इरतिदाद में नमाज़ फ़र्ज़ ही नहीं होती, नमाज़ सिर्फ़ मुसलमान पर फ़र्ज़ होती है ।

नमाज़ी की तरफ़ मुंह करना कैसा ?

सुवाल : नमाज़ी की तरफ़ मुंह कर के खड़े होना या बैठना कैसा है ?

जवाब : नमाज़ पढ़ने वाले के ऐन चेहरे की तरफ़ मुंह कर के खड़ा होना या बैठना मकरूहे तहरीमी है । हां अगर कोई पहले से इस तरफ़ मुंह कर के खड़ा या बैठा है और किसी ने आ कर उस के सामने नमाज़ शुरू कर दी तो अब कराहत नमाज़ शुरू करने वाले पर है जैसा कि फु-क़हाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام** फ़रमाते हैं : किसी शख्स की तरफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ना ऐसे ही मकरूहे है जैसे नमाज़ी की तरफ़ मुंह करना, पस अगर मुंह करना नमाज़ी की तरफ़ से हो तो कराहत इस पर होगी वरना नमाज़ी की तरफ़ चेहरा करने वाले पर कराहत है ।⁽¹⁾

इमाम साहिबान के लिये सलाम फेरने के बा'द दाएं बाएं फिर जाना या मुक़्तदियों की तरफ़ मुंह कर लेना सुन्नत है मगर मुक़्तदियों की तरफ़ मुंह करते हुए इस बात का खयाल रखा जाए कि किसी मस्बूक⁽²⁾ की तरफ़ मुंह न हो चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : (इमाम के लिये) बा'दे सलाम किब्ला रू बैठा रहना हर नमाज़

دينه

1..... درمختار، کتاب الصلوة، ۳۹۶/۲ دار المعرفه بيروت

2..... मस्बूक वोह है कि इमाम की बा'ज रकअतें पढ़ने के बा'द शामिल हुवा और आखिर तक शामिल रहा । (बहारे शरीअत, 1/588, हिस्सा : 3)

में मक्क़ूह है वोह शिमाल व जुनूब व मशरिक् में मुख़्तार है मगर जब कोई मस्बूक़ उस के महाज़ात में (या'नी सामने) अगर्चे अख़ीर सफ़ में नमाज़ पढ़ रहा हो तो मशरिक् या'नी जानिबे मुक्तादियान मुंह न करे । बहर हाल फिरना मतलूब है अगर न फिरा और क़िब्ला रू बैठा रहा तो मुब्तलाए कराहत व तारिके सुन्नत होगा ।⁽¹⁾ लिहाज़ा जमाअत का सलाम फिर जाने के बा'द पीछे नमाज़ पढ़ने वालों की तरफ़ चेहरा कर के उन्हें देखने या पीछे जाने के लिये उन की तरफ़ मुंह कर के उन की नमाज़ ख़त्म होने का इन्तिज़ार करने या नमाज़ियों के सामने खड़े हो कर ए'लान करने या दर्सों बयान करने से बचना होगा । इसी तरह जुमुअतुल मुबारक के खुत्बे में भी एहतियात करनी चाहिये । अगर किसी से येह ग़-लतियां हुई हों तो उसे तौबा करनी चाहिये ।

फ़िनाए मस्जिद में दुन्यवी बातें करना और क़हक़हा लगाना

सुवाल : फ़िनाए मस्जिद किसे कहते हैं ? नीज़ फ़िनाए मस्जिद में दुन्यवी बातें करने और क़हक़हा लगाने का क्या हुक्म है ?

जवाब : फ़िनाए मस्जिद से मुराद वोह जगह है जो ज़रूरिय्याते मस्जिद के लिये बनाई गई हो और मस्जिद की चार दीवारी या हुदूद के अन्दर हो नीज़ उस के और अस्ल मस्जिद के दरमियान रास्ता न हो जैसा कि फु-क़हाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : फ़िनाए मस्जिद वोह मकान है जो मस्जिद से मुत्तसिल (या'नी

دينه

1..... फ़तावा र-ज़विय्या, 6/205 रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कजुल औलिया लाहोर

मिला हुवा) हो और दरमियान में रास्ता न हो ।⁽¹⁾
 रही बात फ़िनाए मस्जिद में दुन्यवी बातें करने और क़हक़हे लगाने की तो इस के मु-तअल्लिक मेरे आका आ'ला हज़रत **عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزْمَات** फ़रमाते हैं : फ़सीले मस्जिद बा'ज़ बातों में हुक्मे मस्जिद में है मो'तकिफ़ बिला ज़रूरत उस पर जा सकता है उस पर थूकने या नाक साफ़ करने या नजासत डालने की इजाज़त नहीं, बेहूदा बातें, क़हक़हे से हंसना वहां भी न चाहिये और बा'ज़ बातों में हुक्मे मस्जिद नहीं उस पर अज़ान देंगे, उस पर बैठ कर वुजू कर सकते हैं । जब तक मस्जिद में जगह बाकी हो उस पर नमाज़े फ़र्ज़ में मस्जिद का सवाब नहीं, दुन्या की जाइज़ क़लील बात जिस में चप-क़लश (झगड़ा) हो न किसी नमाज़ी या ज़ाकिर (या'नी ज़िक्र करने वाले) की ईज़ा (तो) इस में हरज नहीं ।⁽²⁾

नमाज़ी के आगे से गुज़रने की वर्इदात

सुवाल : नमाज़ी के आगे से गुज़रना कैसा है ?

जवाब : नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है अह़ादीसे मुबा-रका में इस की बहुत सख़्त वर्इदात बयान हुई हैं चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि मैं ने **رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को फ़रमाते सुना : अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला जानता कि उस पर क्या है ? तो चालीस बरस खड़े रहने को गुज़रने से बेहतर जानता ।⁽³⁾

دينه

1 غنية التملی، فصل فی احکام المسجد، مسائل متفرقة، ص ۲۱۴ مرکز الاولیاء لاھور

2 فताوا ر-ज़یویا، 16/495

3 مسند زيار، مسند زید بن خالد الجهنی، ۲۳۹/۹، حدیث: ۳۷۸۴، مکتبة العلوم والحکم المدینة المنورة

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि **رَسُولُ اللَّهِ** ने फ़रमाया : अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है ? तो सो बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहूबार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला अगर जानता कि उस पर क्या गुनाह है ? तो ज़मीन में धंस जाने को (नमाज़ी के आगे से) गुज़रने से बेहतर जानता ।⁽²⁾ मुसल्ली (नमाज़ी) के आगे सुतरा हो या'नी कोई ऐसी चीज़ जिस से आड़ हो जाए, तो सुतरा के बा'द से गुज़रने में कोई हरज नहीं ।⁽³⁾

सुतरा कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : सुतरा कैसा होना चाहिये ? नीज़ नमाज़ी के आगे से गुज़रने के लिये क्या चादर का सुतरा काफी है ?

जवाब : सुतरा कम अज़ कम एक हाथ ऊंचा और उंगली के बराबर मोटा होना चाहिये लिहाज़ा जो चीज़ सुतरा बनाई जा रही है उस का कम अज़ कम एक हाथ ऊंचा और उंगली बराबर मोटा होना ज़रूरी है अगर इस मिक्दार से कम होगी तो सुतरा नहीं होगा । फ़िक्हे ह-नफ़ी की मशहूरो मा'रूफ़ किताब **दुरै मुख़्तार** में है : सुतरा एक हाथ की मिक्दार ऊंचा और उंगली बराबर

دينه

① ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب المرون، بين يدي المصلى، 1/506، حديث: 936

② موطا امام مالك، كتاب قصر الصلاة في السفر، باب التشديد في أن يمر... الخ، 1/153،

حديث: 321 دار المعرفة بيروت

③ बहारे शरीअत, 1/615, हिस्सा : 3

मोटा हो ।⁽¹⁾

रही बात चादर को सुतरा बनाने की तो अगर किसी ने चादर को ऊपर से पकड़ कर छोड़ दिया और नमाज़ी के आगे से गुज़रा तो इस तरीक़े से चादर का सुतरा नहीं हो सकता और गुज़रने वाला गुनहगार होगा ।

❦ कीने की ता 'रीफ़ और सबब ❦

सुवाल : कीना किसे कहते हैं ? नीज़ कीना पैदा होने का सबब क्या है ?

जवाब : कीना दिल की छुपी हुई दुश्मनी को कहते हैं, येह एक बातिनी बीमारी है ऐसी बातिनी बीमारियों को मोहलिकात कहते हैं, इन के बारे में ज़रूरी अहकामात का जानना मुसल्मान के लिये फ़र्जे ऐन और न जानना गुनाह है । कीना पैदा होने का बुन्यादी सबब "गुस्सा" है जैसा कि हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : कीना का मा'ना येह है कि "इन्सान अपने दिल में किसी को (बिला इजाज़ते शर-ई) बोझ समझे और हमेशा के लिये उस से बुर्ज़ो अ़दावत रखे और नफ़त करे ।" जब इन्सान को गुस्सा आता है और वोह उस वक़्त इन्तिकाम लेने से अ़जिज़ होने की वज्ह से गुस्सा पीने पर मजबूर होता है तो उस का येह गुस्सा बातिन की तरफ़ चला जाता है और क़रार पकड़ लेता है फिर "कीने" की शक़ल इख़्तियार कर लेता है ।⁽²⁾

دينه

1 دُرِّمَحْتَمَار، كِتَابُ الصَّلَاةِ، بَابُ مَا يَفْسِدُ الصَّلَاةَ وَمَا يَكْرَهُ فِيهَا، ٢/٢٨٣

2 اَحْيَاءُ الْعُلُومِ، كِتَابُ ذَمِّ الْغَضَبِ وَالْحَقْدِ وَالْحَسَدِ، الْقَوْلُ فِي مَعْنَى الْحَقْدِ... الخ، ٣/٢٢٣ يتقدم وتأخر

دار صادر بيروت

बिला वज्हे शर-ई बुग़ज़ो कीना रखने का हुक्म

सुवाल : किसी मुसलमान के मु-तअल्लिक अपने दिल में बुग़ज़ो कीना रखना कैसा है ?

जवाब : मुसलमान से बिला वज्हे शर-ई कीना व बुग़ज़ रखना हराम है ।⁽¹⁾ लिहाजा हर दम अपने सीने को मुसलमानों के कीने से पाक रखिये । हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि मुझ से नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! अगर तुम सुब्ह व शाम इस हाल में करो कि तुम्हारे दिल में किसी की तरफ़ से कीना न हो तो (ऐसा ही) करो । फिर मुझ से फ़रमाया : **يَا بَنِيَّ وَذَلِكَ مِنْ سُئِنِي، وَمَنْ أَحْيَا سُئِنِي، فَكَأَنَّ أَحْيَيْتَنِي فِي الْجَنَّةِ** ऐ मेरे बेटे ! यह मेरी सुन्नत है और जिस ने मेरी सुन्नत को ज़िन्दा किया उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा ।⁽²⁾ **اللّٰهُمَّ** हमारे सीनों को मुसलमानों के कीनों से पाको साफ़ फ़रमाए और हमें इस से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

أَمِينٍ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

कीनए मुस्लिम से सीना पाक कर

इत्तिबाए साहिबे लौलाक कर

(वसाइले बख़्शाश)

دينه

①..... फ़तावा र-जविय्या, 6/526

②..... ترمذی، کتاب العلم، باب ما جاء في الاخذ بالسنة... الخ، ۳/۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷ دار الفکر بیروت

कीने से बचने का तरीका

सुवाल : कीने से बचने का तरीका भी इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : कीने से बचने के लिये इस के बारे में इल्म होना ज़रूरी है, जब इस के बारे में इल्म होगा तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस से बचने का भी ज़ेहन बनेगा । फ़ी ज़माना कीने का मरज़ बहुत ज़ियादा आम होता जा रहा है, किसी को अपने मां बाप से कीना है तो किसी को अपनी औलाद से, किसी को पड़ोसियों से तो किसी को अज़ीज़ो अक़रिब से । सास और बहू का कीना तो मिसाली है, उमूमन इन की आपस में ठनी रहती है जिस की वजह से एक दूसरे की बुराई (या'नी ग़ीबत वग़ैरा) करती और आपस में बद गुमानी रखते हुए **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** एक दूसरे पर जादू के इल्ज़ामात धरती हैं । उमूमन ख़ानदान में हर एक येही कहता दिखाई देता है कि येह जादू करता है, वोह जादू करता है, फुलां ने जादू करवा दिया है गोया कि सारा मुआ-शरा ही जादूगर हो गया है । फिर येह लोग अ़ामिलों के पास चक्कर लगाते हैं, अ़ामिल भी इन की नफ़िसय्यात के मुताबिक़ येही बताते हैं कि तुम पर जादू किया गया है और बसा अवक़ात वोह जादू करवाने वाले के नाम का पहला हर्फ़ भी बता देते हैं । अब उस नाम के बारे में ग़ौरो फ़िक़्र शुरूअ हो जाता है कि इस हर्फ़ से किस का नाम शुरूअ हो रहा है, इत्तिफ़ाक़ से जिस पर शक़ हो उसी के नाम का पहला हर्फ़ वोही हो जो अ़ामिल ने बताया है तो अब उस की शामत आ जाती है और उस के बारे में दिल में कीना जनम लेना शुरूअ कर देता है ।

कीने से बचने के लिये अपने आप को अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ के**

अज़ाब से डराइये और यूं अपना ज़ेहन बनाइये कि कीना परवर शबे बराअत (या'नी जहन्नम की आग से छुटकारा पाने की रात) में भी **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की नज़रे रहमत और मग़िफ़रत से महरूम रहता है जैसा कि नबियों के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने इब्रत निशान है : मेरे पास जिब्रील (**عَلَيْهِ السَّلَام**) आए और कहा : यह शा'बान की पन्दरहवीं रात है इस में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** जहन्नम से इतनों को आज़ाद फ़रमाता है जितने बनी कल्ब की बकरियों के बाल हैं मगर काफ़िर और अदावत वाले (कीना परवर) और रिश्ता काटने वाले, (तकब्बुर करते हुए टख़्ख़ों से नीचे) कपड़ा लटकाने वाले, वालिदैन की ना फ़रमानी करने वाले और शराब के आदी की तरफ़ नज़रे रहमत नहीं फ़रमाता ।⁽¹⁾

याद रखिये ! कीना परवर बहुत बड़ा इबादत गुज़ार ही क्यूं न हो उसे डर जाना चाहिये कि येह बातिनी बीमारी कहीं उस की सारी नेकियों पर पानी न फेर दे क्यूं कि पूरे गोदाम को जलाने के लिये एक चिंगारी काफ़ी होती है, एक तीली जला कर गोदाम में डाल दीजिये तो पूरा गोदाम देखते ही देखते जल कर राख बन जाएगा लिहाज़ा अपने दिल को कीनए मुस्लिम से पाक कीजिये और जिस के बारे में दिल में कीना हो उसे अपने से बेहतर जानते हुए येह ज़ेहन बनाइये कि हो सकता है वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में मक्बूल हो । बहर हाल कोई भी ऐसी तरकीब की जाए कि दिल कीनए मुस्लिम से पाक हो कर सरकार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महब्बत का मदीना बन जाए,

دينه

1..... شعب الايمان، باب في الصيام، ما جاء في ليلة النصف من شعبان، 3/83، حديث: 3837

دار الكتب العلمية بيروت

इस जिम्न में एक हिकायत मुला-हज़ा कीजिये : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** कीमियाए सअ़ादत में नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कत्तानी **فَدَسَّ بِسُرَّةِ النَّوْرَانِي** फ़रमाते हैं : एक शख्स ने मेरे साथ दोस्ती की मगर मेरे दिल में बोझ रहा। मैं ने उसे तोहफ़ा दिया ताकि दिल की गिरानी दूर हो मगर फ़ाएदा न हुवा। मैं उसे पकड़ कर अपने कमरे में ले गया और कहा : अपना पाउं मेरे चेहरे पर रखो। उस ने इन्कार किया, मैं ने कहा : तुझे ऐसा करना ही पड़ेगा चुनान्चे उस ने अपना पाउं मेरे चेहरे पर रखा तो मेरे दिल से गिरानी दूर हो गई।⁽¹⁾

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम इस तरह नहीं कर सकते तो कम अज़ कम जिस से बुज़ो कीना हो उसे हक़ीर जानने से बचते हुए सलाम व मुसा-फ़हा करने और तोहफ़ा वग़ैरा देने की अ़ादत बनानी चाहिये कि इस से भी आपस में महब्वत पैदा होती है और बुज़ो कीना दूर होता है जैसा कि हुज़ुरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इशाद फ़रमाया : **تَصَافَحُوا يَذْهَبُ الْغِلُّ وَتَهَادُوا تَحَابُّوا وَتَنَهَبُ الشُّحْنَاءُ** या'नी मुसा-फ़हा किया करो कीना दूर होगा और तोहफ़ा दिया करो महब्वत बढ़ेगी और बुज़ दूर होगा⁽²⁾ ⁽³⁾

دينه

① كيمياء سعادته، ركن دوم، معاملات تست، حق پنجم، ۱/۳۸۰ انتشارات گنجینه تهران

② موطا امام مالک، کتاب حسن الخلق، باب ماجاء فی المهاجرة، ۲/۴۰۷، حدیث: ۱۷۳۱

③ मज़ीद मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूअ 352 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “बातिनी बीमारियों की मा'लूमात” और 83 सफ़हात पर मुशतमिल रिसाले “बुज़ो कीना” का मुता-लअ कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** इस बातिनी बीमारी से बचने का ज़ेहन बनेगा।
(शो'बए फैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

नमाज़े फ़ज़्र के लिये उठने में सुस्ती की वुजूहात

सुवाल : नमाज़े फ़ज़्र के लिये उठने में बहुत सुस्ती होती है इस की क्या वजह है ? नीज़ जल्द बेदार होने का नुस्खा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

जवाब : नमाज़े फ़ज़्र के लिये बेदार होने में सुस्ती की एक वजह रात में सेर हो कर खाना खाना भी है क्यूं कि डट कर खाने से नींद गहरी आती है लिहाज़ा खाना कम खाएं, जब खाना कम खाएं तो नींद गहरी नहीं आएगी और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सुबह आंख भी जल्द खुलेगी ।

दूसरी वजह रात को देर से सोना भी है । अगर आप रात देर तक शाहराहों पर घूमते फिरते रहेंगे या रात में ना'त ख़्वानी के नाम पर दो दो बजे तक बैठे रहेंगे फिर तीन या चार बजे जब सोएंगे तो भला फ़ज़्र में आंख कैसे खुलेगी ! अगर आप की इन कोताहियों की वजह से नमाज़े फ़ज़्र क़ज़ा हुई तो आप गुनाहगार होंगे बल्कि रात का अक्सर हिस्सा गुज़र जाए और नमाज़े फ़ज़्र जाने का अन्देशा हो तो अब सोने की शरअन इजाज़त ही नहीं जैसा कि सदरुशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفِي** फ़रमाते हैं : दुखूले वक़्त के बा'द सो गया फिर वक़्त निकल गया तो क़अन गुनहगार हुवा जब कि जागने पर सहीह ए'तिमाद या जगाने वाला मौजूद न हो बल्कि फ़ज़्र में दुखूले वक़्त से पहले भी सोने की इजाज़त नहीं हो सकती जब कि अक्सर हिस्सा रात का जागने में गुज़रा और ज़न है कि अब सो गया तो वक़्त में

आंख न खुलेगी ।⁽¹⁾ लिहाज़ा इशा की नमाज़ पढ़ कर हत्तल इम्कान दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये, येह म-दनी इन्आमात में से एक म-दनी इन्आम भी है कि “क्या आज आप ने मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ा या पढ़ाया ? नीज़ मस्जिदे महल्ला की इशा की जमाअत के वक़्त से दो घन्टे के अन्दर अन्दर घर पहुंच गए ?”

वक़्त पर बेदार होने के लिये सोते वक़्त अपने सिरहाने अलार्म वाली घड़ी रख लीजिये जिस से आंख खुल जाए मगर एक अ़दद घड़ी पर भरोसा न कीजिये कि बसा अवक़ात नींद में हाथ लग जाने या सेल (Cell) ख़त्म हो जाने या यूं ही ख़राब हो कर बन्द हो जाने का अन्देशा है लिहाज़ा दो या हस्बे ज़रूरत ज़ाइद घड़ियां हों तो बेहतर है । आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن** फ़रमाते हैं : सिर्फ़ एक घड़ी पर ए'तिमाद नहीं करना चाहिये कि बा'ज़ अवक़ात खुद बखुद आगे पीछे हो जाती है ।⁽²⁾ (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ** फ़रमाते हैं :) मैं सोते वक़्त हत्तल इम्कान तीन घड़ियां अपने सिरहाने रखता हूं ।

अगर जज़्बा होगा तो राहें खुद बखुद खुलती चली जाएंगी और अगर जज़्बा नहीं होगा तो घर क्या मसाजिद में दौराने ए'तिकाफ़ भी कई बद नसीब लोग बा जमाअत नमाज़ अदा करने से

دينه

①..... बहारे शरीअत, 1/701, हिस्सा : 4

②..... फ़तावा र-ज़विय्या, 30/124

मह्रूम रह जाते हैं। अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** हमें बा अमल बनाए और पांचों नमाज़ें मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अमल का हो जज़्बा अता या इलाही
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही
में पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअत
हो तौफ़ीक़ ऐसी अता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

जल्द बेदार होने का एक रूहानी नुस्खा येह है कि सूरे कहफ़ की आख़िरी चार आयते⁽¹⁾ या'नी ﴿اِنَّ الزّٰیۡنِ اٰمَنُوۡا﴾ से ख़त्म सूरह तक रात में या सुब्ह जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़ें आंख खुलेगी। (اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ)⁽²⁾

बे वक़्त नींद आने की वजह मअ इलाज

सुवाल : बे वक़्त नींद आने की क्या वजह है ? नीज़ इस का इलाज भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

بِسْمِ

- 1..... सूरे कहफ़ की आख़िरी चार आयत येह हैं : ﴿اِنَّ الزّٰیۡنِ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَاٰتٍ لّٰهُمۡ : ﴿۱﴾ كَانَتِ الْبَحْرُ مَدَاۗءَ الْكَلْبِ لَتَرٰى لِنَقْدِ الْبَحْرِ قَبْلَ اَنْ تَنْقَدَ كَلْبٌ سَرِيۡنٌ وَّفِيۡهَا لَا يَبۡتَغُوۡنَ عَنْهَا حَوٰلًا ۝ قُلۡ لَّوۡ كَانَ الْبَحْرُ مَدَاۗءَ الْكَلْبِ لَتَرٰى لِنَقْدِ الْبَحْرِ قَبْلَ اَنْ تَنْقَدَ كَلْبٌ سَرِيۡنٌ وَّلَوۡ جُمۡنَا بِرِثۡلِهِ مَدَدًا ۝ قُلۡ اِنۡمَا اَنَا بَشَرٌ مِّثۡلُكُمْ يُوۡحٰى اِلَیَّ اَنْمَا الْاِلٰهُ الْوَاحِدُ فَمَنۡ كَانَ يَنۡزُجۡ الْقَاۡرِءَ رَبِّهٖ فَلْيَعۡمَلۡ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشۡرِكۡ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖ ۝ اٰحَدًا ۝﴾

- 2..... श-ज-रए कादिरिय्या र-जविय्या ज़ियाइय्या अतारिय्या, स. 32, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

जवाब : बे वक्त नींद उमूमन जिगर और गुर्दे की खराबी की वजह से आती है। इस का इलाज यह है कि “एक गिलास पानी (नीम गर्म हो तो ज़ियादा बेहतर है इस) में एक चम्मच शहद मिला कर नहार मुंह (या'नी सुब्ह कुछ खाने से क़ब्ल) और रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक्त बिला नागा मुस्तक़िल इस्ति'माल कीजिये मोटापे और बहुत सी बीमारियों बिल खुसूस पेट के अमराज़ से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हिफ़ाज़त होगी। बेहतर यह है कि इस में एक वरना आधा लीमूं भी निचोड़ लिया करें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़वाइद ज़ाइद हो जाएंगे। अगर मुता-लआ करते करते या इज्तिमाअ वगैरा में बैठे बैठे बे वक्त नींद चढ़ती होगी तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस से भी नजात मिलेगी।”⁽¹⁾ इस इलाज के लिये कोई वक्त मुकर्रर नहीं है लेकिन बेहतर वक्त नहार मुंह ही पीना है। कोई भी इलाज शुरूअ करने से क़ब्ल अपने मुआलिज से ज़रूर मशवरा कर लीजिये।



دینہ

①..... फैजाने सुन्नत, 1/722, मक-त-बतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा 'वते इस्लामी)

फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	मुरतद होने के बा'द मुसल्मान होने	
शैतान या जिन्नात को		वाले की क़ज़ा नमाज़ों का हुक्म	16
बदी की ताकत कहना कैसा ?	2	नमाज़ी की तरफ़ मुंह करना कैसा ?	17
जिन्नों में मज़ाहिब	3	फ़िनाए मस्जिद में दुन्यवी	
शबीह वाले मुसल्ले पर		बातें करना और क़हक़हा लगाना	18
नमाज़ पढ़ना कैसा ?	4	नमाज़ी के आगे से	
बिला हाइल ज़मीन पर		गुज़रने की वईदात	19
नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है	6	सुतरा कैसा होना चाहिये ?	20
नक़शो निगार वाले मुसल्लों पर		कीने की ता'रीफ़ और सबब	21
नमाज़ पढ़ना अच्छ नहीं	9	बिला वजहे शर-ई	
मुसल्लों से चिट जुदा कर दीजिये	9	बुग़ज़ो कीना रखने का हुक्म	22
मस्जिद की दरियों का		कीने से बचने का तरीक़ा	23
बे महल इस्ति'माल	10	नमाज़े फ़ज़्र के लिये उठने में	
मो'तकिफ़ीन का मस्जिद के		सुस्ती की वुजूहात	26
वुजूख़ाने पर कपड़े धोना	11	बे वक़्त नींद आने की वजह	
हालते ए'तिक़ाफ़ में नहाने का हुक्म	13	मअ़ इलाज	28



اللہ

فرمانِ سفیان ثوری

”مکمل ہو کر دنیا سے آؤ“

”اپنے بھائی کی غیر موجودگی میں اُس کا ذکر

اُسی طرح کرو جس طرح اپنی غیر موجودگی

میں تم اپنا ذکر ہونا پسند کرتے ہو۔“

(غیبت کی تباہ کاریاں ص ۱۲۵)

المَدِينَةُ
المَكِّيَّةُ
الْمُنِيرَةُ

۱۴۲۵ھ

۲۰۰۴

دارالافتاء
المدینة المنیرة



اللہ

جَمْعہ مبارک

صلوا علیما الحبيب! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

”بے شک اللہ تعالیٰ پر جمعہ کو

چھ (6) لاکھ چھتیسویں کو آگ سے

آزاد فرماتا ہے۔“ (قوت القلوب ص ۱۲۸)

۱۲۸ ص ۱۲۸
مکتبہ المدینہ

۱۲۸ھ
ربیع الاول
مدینہ
بقاعہ
۱۲۸ھ

مدینہ
مکہ
بقیع
جمعہ ماہ رمضان سے پیار



Bete Ko Nasihat (Hindi)

नफ़स की इस्लाह और फ़िक्रे आखिरत का जज़्बा बढ़ाने वाली ज़ामेअ तहरीर

أَيُّهَا الْوَلَدُ

तरजमा बनाम

बेटे को नसीहत

مترجم: محمد صالح المنجد
मुसनिफ़ : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली
(अल मु-तवफ़फ़ा 505 हि.)



नेक नमाजी बनने के लिये

हर जुम्आरात बा'द नमाजे इशा आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❶ सुन्नतों की तरबियत के लिये म-दनी क़ाफ़िले में आशिकाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❷ रोज़ाना “फ़िक्रे मदीना” के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक्सद : “मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ**” अपनी इस्लाह के लिये “म-दनी इन्आमात” पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये “म-दनी क़ाफ़िलों” में सफ़र करना है। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ**



मक-त-बतुल मदीना की मुख्तलिफ़ शाखें

- ❶ अहमदआबाद :- फैजाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरजापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फोन : 9327168200
- ❷ देहली :- मक-त-बतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ मस्जिद, देहली - 6, फोन : 011-23284560
- ❸ मुम्बई :- फैजाने मदीना, ग्राउन्ड फ्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खडक, मुम्बई, महाराष्ट्र, फोन : 09022177997
- ❹ हैदरआबाद :- मक-त-बतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net